तुहफ़तुन्नदवः

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

तुहफ़तुन्नदवः

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: तुहफ़तुन्नदवः
Name of book	: Tohfatunnadwah
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mau'ud Alaihissalam
अनुवादक	: डा अन्सार अहमद पी.एच.डी आनर्स इन अरबिक
Translator	: Dr Ansar Ahmad, Ph.D, Hons in Arabic
टाइपिंग, सैटिंग	: नादिया परवेज़ा अज़हर
Typing Setting	: Nadiya Perveza Azhar
संस्करण तथा वर्ष	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) अगस्त 2018 ई०
Edition. Year	: 1st Edition (Hindi) August 2018
संख्या, Quantity	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	: Nazarat Nashr-wa-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए. और मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य ने इसकी प्रूफ़ रीडिंग और रीवियु आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

तुहफ़तुन्नदव:

यह पुस्तिका 6 अक्टूबर 1902 ई. को प्रकाशित हुई। इस पुस्तिका की भूमिका "अत्तब्लीग़" शीर्षक के अन्तर्गत अरबी भाषा में है। जिसमें दारुन्नदव: वालों को निमंत्रण दिया गया है कि वे पवित्र क़ुर्आन को हकम बनाएं। और अपने मसीह मौऊद होने का वर्णन किया है, और ख़ुदा तआला से मामूर होने पर क़सम खाई है और अन्त में इस पुस्तिका को अपने प्रतिनिधियों के द्वारा नदव: के उलेमा के पास भेजने का वादा फ़रमाया है।

लिखने का कारण

इस पुस्तिका को लिखने का कारण यह हुआ कि नद्‌तवतुल उलेमा ने 9,10,11 अक्टूबर 1902 ई. को अमृतसर में जल्सा आयोजित करने की घोषणा की और हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब पेन्शनर ने जिनकी चर्चा अरबईन न. 3 में आ चुकी है 2 अक्टूबर 1902 ई. को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के नाम एक विज्ञापन दिया जिसका वर्णन करके हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इस

> "वह लिखते हैं कि मैं एक बार मौखिक तौर पर इस बात का इक़रार कर चुका हूं कि जिन लोगों ने नबी या रसूल और या कोई ख़ुदा का मामूर होने का दावा किया तो वे लोग ऐसे इफ़्तिरा के साथ जिस से लोगों को गुमराह करना अभीष्ट था तेईस वर्ष

तक (जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अवतरण का पूर्ण समय है) जीवित रहे अपितु इस से भी अधिक और फिर हाफ़िज़ साहिब उसी विज्ञापन में लिखते हैं कि उन के उस कथन के समर्थन में उनके एक मित्र अबू इस्हाक़ मुहम्मद दीन नामक ने 'क़तउलवतीन' एक पुस्तिका भी लिखी थी जिसमें झूठे दावेदारों के नाम दावे की अवधि सहित ऐतिहासिक पुस्तकों के हवालों से दर्ज हैं।"

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19, पृष्ठ-92)

इसी प्रकार इस विज्ञापन में हाफ़िज़ साहिब ने हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम से यह मांग की कि आप यह इक़रार लिख दें कि यदि 'नदवतुलउलमा' के सालाना जल्से में जो 9 अक्टूबर 1902 ई. के प्रारंभ से हिन्दुस्तान अमृतसर में आयोजित होगा। सम्मिलित होने वाले के प्रसिद्ध उलमा 'क़तउलवतीन' पुस्तक प्रस्तुत उदाहरणों को सही ठहराएं, तो ऐसी स्थिति में आपको उसी जल्से में तौबः करनी चाहिए। आप ने इस मांग के उत्तर में फ़रमाया -

"मेरी इन लोगों पर सुधारणा नहीं है। सच्ची बात यह है कि न तो इन लोगों को मुत्तक़ी (संयमी) समझता हूं और न क़ुर्आन की वास्तविकताओं का आरिफ़ (ज्ञानी) समझता हूं फिर मैं उनका हकम होना किस कारण से स्वीकार करूं हां यदि उनमें से कुछ चुने हुए मौलवी सत्यभिलाषी के तौर पर

क़ादियान में आ जाएं तो मैं उनको मौखिक तब्लीग़ कर सकता हूं।"

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19, पृष्ठ-95)

और लिखा कि "पुस्तक क़तउलवतीन में झूठे नुबुव्वत के दावेदारों के बारे में बिना सर पैर के क़िस्से लिखे गए हैं वे किस्से उस समय तक लेशमात्र विश्वसनीय नहीं जब तक यह सिद्ध न हो कि मुफ़्तरी लोगों ने अपने उस दावे पर आग्रह किया और तौबः न की। और यह आग्रह क्योंकर सिद्ध हो सकता है जब तक उसी युग के किसी लेख के द्वारा यह बात सिद्ध न हो कि वे लोग इसी इफ़्तिरा और नुबुव्वत के झूठे दावे पर मरे और उनका उस समय के किसी मौलवी ने जनाज़ा न पढ़ा और न वे मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में दफ़्न किए गए और ऐसा ही ये हिकायतें कदापि सिद्ध नहीं हो सकतीं जब तक यह सिद्ध न हो कि उनकी समस्त आयु के झूठी गढ़ी हुई बातें जिन को उन्होंने बतौर इफ़्तिरा ख़ुदा का कलाम ठहराया था वे अब कहां हैं।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19, पृष्ठ- 94, 95)

हाफ़िज़ साहिब के विज्ञापन का उत्तर देने के बाद आप ने नदवः के उलेमा पर इत्माम-ए-हुज्जत के लिए अपने मसीह मौऊद होने के दावे को तर्क़ों सहित प्रस्तुत किया और क़ादियान से जल्से के दिनों में अमृतसर एक प्रतिनिधि मण्डल भेजा जो मौलवी सय्यद मुहम्मद अहसन साहिब अमरोही, मौलवी अबू-यूसुफ़, मुहम्मद मुबारक साहिब सियालकोटी, मौलवी सय्यद मुहम्मद सर्वर शाह साहिब हज़ारवी, मौलवी मुहम्मद अब्दुल्लाह साहिब काश्मीरी और

शेख़ याक़ूब अली साहिब एडीटर अखबार अलहकम पर आधारित था। अमृतसर पहुंच कर प्रतिनिधन मण्डल को ज्ञात हुआ कि हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब ने नदवः वालों से मशवरा किए बिना स्वयं विज्ञापन प्रकाशित किया था। नदवः के सेक्रेटरी से इस से संबंधित कोई अनुमति या मशवरा नहीं लिया गया था। इसलिए प्रतिनिधि मण्डल ने व्यक्तिगत तौर पर लोगों तक सिलसिले का सन्देश पहुंचाया और तुहफ़तुन्नदवः लोगों में वितरित करके उसका खूब प्रचार किया।

اَلتَّـــبْلِيْـــغ

يَااهـل دارالنـدوة تعالـوا الٰى كلمـةٍ سـواءٍ بَيننـا وَبَينكُـم اَنْ لَّا نُحَكِّـمَ اِلَّا القـرآن۔ وَلَا نقبـل الا ماوافـق قـول الرحمٰـن۔ وهٰـذا هـو الديـن القَيّـم ايّهـا المتقاعسـون۔ وان القـرٰان كتـاب خُتـم بـه الهُدیٰ۔وفيـه كتـبٌ قيمّـة وخبر مـا يـأتى ومـا مضٰـى فَبِـاَىِّ حديـث بعـده تؤمنـون۔ اعلمـوا ان الخير كلّه فى القـرٰان وشـرّ الاحاديـث مَا خالفـه فاحذروهـا ايهـا المتقون۔و كلمـا خالـف هـدى القـرٰان وقصصـه فاعلموا انـه سـقط ولا يقبـله الّا الفٰـسقون۔ وَاِنّى انـا المسـيح وبالحق اَمشـى واَسـيح ولِلّٰه اُنـادى واصيـح وَاُذَكِّرُكُمْ ايّـام اللّٰه فهل انتم تتذّ كـرون۔ وانّى جئتكـم ببيّنـة مـن ربّى وعُلّمتُ مالـم تُعلّموا واَبصـرت مـالا تُبصـرون۔ اتكذبونـى ولا تجيئونـى ولا تسـئلون ان عيسٰـى مـات ولا يُحـيى باحيـاء كـم فـلا تكذّبـوا القـرٰان ايّهـا المجـترء ون۔ وَاِن كانَ نـازلًا قبـل يـوم القيامـة كمـا تزعمـون۔ فَلِمَ انكـر لمـا سـئل عـن ضلالة النصـارىٰ۔ واعتذربعـدم العلـم كما انتـم تدرسـون۔ولم يقل انى اعلم ما احدثوابعـدى بمـارُدِدْتُ الى الدنيـا ورئيـتُ مـا كانـوا يعملـون۔ و كان الحق ان يقـول ربّ انّى رجعتُ الى الدنيـا باذنـك ولبثـتُ فيـهم الى اربعين سـنة فوجدتـهم يعبدوننـى واُمِّـىَ وعليـه يُصِرُّون۔ فكسـرتُ صلبانهم واَصلحتُ زمانهم وقتلت كثيرا منـهم فدخلـوا فى ديـن اللّٰه وهـم يتضرّعـون۔ فاسـئلوا عيسٰـى كُمْ لِمَ يـكذب يـوم القيامـة ويُخفـى شـهادة كانـت عنـده

كأنه من الذين لا يعلمون۔ وانی اقسم بالله انی منه فعظموا
حلف الله ان كنتم تتقون۔ وانی اعطیت كثیرا من الاٰیات
وسدّ القراٰن طریقًا اٰخر من دونی فاین تفرّون۔ وقد جئت علٰی
رأس المائة كما انتم تعلمون۔ وخُسفَ القمر والشمس فی
رمضان۔ لیكونا آیتین لی من ربّی الرّحمٰن ثم انزل الطاعون
لعلّ الناس یتفكرون۔ فمالكم لا تنظرون الی آیی الله او
تعاف عیونكم ما تنظرون۔ ایها الناس عندی شهادات من
الله فهل انتم تؤمنون۔ ایها الناس عندی شهادات من الله فهل
انتم تسلمون۔ وَاِنْ تَعُدُّوا شهادات ربّی لا تحصوها فاتقوا
الله ایها المستعجلون۔ اَفَكُلَّمَا جاء كم رسول بما لا تهوی
انفسكم ففریقا كذّبتم و فریقا تقتلون انا نُصِرنا من ربّنا
و لَا تُنْصَرُون من الله ایها الخائنون۔ اَ قتلتمونی بفتاوی
القتل او دعاوی رفعتموها الی الحكّام ثم لا تتندمون۔ كتب
الله لاغلبن انا و رسلی ولن تُعجزوا الله ایّها المحاربون۔ وَوَاللّٰهِ
انّی صادق ولست من الذین یختلفون۔ اَ تُنكرونی و قد تمت
علیكم الحجّة الا تردون الی الله او انتم كمسیحكم خالدون۔
الا تتدبرون سورة النور و التحریم والفاتحة اَو تَكْرَهُون
قراءتها او علی انفسكم تُحرّمون۔ وهذه رسالة منّی اهدیتُ
لكم یا اهل الندوة لعلّكم تفتحون عیونكم او تتمّ علیكم
حجة الله فلا تعتذرون بعدها ولا تختصمون۔ وانی سمیتها
تُحْفَة النَّدْوَة وانّی اُرْسل اِلیكم رُسلی وانظر كیف یرجعون
وانّی اَدعو الله ان یّجعلها مباركة لقوم لا یستكبرون۔ ربّ
اشهد انّی بلّغْتُ مَااَمَرْتَ فاكتبنی فِی الّذین یُبَلّغون رسالاتك
ولا یخافون۔ آمین ثُمَّ آمین۔

नज़्म मीर नासिर नवाब साहिब देहलवी

कश्ती नूह व दावतुल ईमान
है अजब इक किताब अली शान

ताज़ा होता है उसको पढ़कर दीं
इस से बढ़ती है रौनकें ईमान

है यह आबे-हयात से बेहतर
मुर्दा रूहों की बख़्शती है जान

इसकी तारीफ़ से हूं मैं आजिज़
वस्फ़ से उसके लाल मेरी ज़ुबान

गुमरहों की है रहनुमा यह किताब
है हिदायत का उनके ये सामान

बेकसों की है तकियः गाह यही
ला इलाजों का इसमें है दर्मान

हैं मज़ामीन इस के ला सानी
है ख़ुदा के रसूल का यह निशान

इस से खुलते हैं दीन के उक़्दे
ग़ौर से गर उसे पढ़े इन्सान

इल्म आता है जुहल जाता है
दूर होते हैं इससे वह्मो गुमान

बाग़ दुनिया नहीं यह जन्नत है
जिसमें फिरते हैं हूर और ग़िल्मान

इसमें हैं शीरो शहद की नहरें
जा बजा इसमें क़स्त्र आलीशान

कश्ती बे नज़ीर है यह मुफ़्त
कोई उजरत का यां नहीं ख्वाहान

जिसने हम को अता यह कश्ती की
ऐसे मल्लाह पर हैं हम क़ुर्बान

या इलाही तू हम को दे तौफ़ीक़
क्योंकि तू है रहीम और रहमान

दूर हों हम से नफ़्स के जज़्बात
हम से भागे परे परे शैतान

तेरे हुक्मों पै हम चलें दिन-रात
दिल से हम मान लें तिरे फ़र्मान

हम से तू खुश हो तुझ से हम राज़ी
जिस्म से जब हमारे निकले जान

तेरा बन्दा है नासिर आजिज़
चाहता है यह तुझ से तेरी अमान

तेरी रहमत का तुझ से ख़्वाहां है
फ़ज़्ल का तेरे तुझ से है ज़ोयान

दूर कर उसके बोझ ऐ मौला
रास्ता अपना उस पै कर आसान

अत्क़िया में इसे भी शामिल कर
रहम कर रहम उस पै ऐ सुब्हान

ढांक दे इसके ऐब ऐ सत्तार
कि यह रखता है तुझ पै नेक गुमान

ब तुफ़ैल मुहम्मद अहमद
दर्द का इसके जल्द कर दर्मान

दिल से अपने यह है ग़ुलाम-ए इमाम
कर मदद इसकी ज़ाहिरो पिन्हान

* * *

पुस्तक तुहफ़तुन्नदव:

बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

بہر دم مددے از خدا ہمی آید
کجاست اہل بصیرت کہ چشم بکشاید

आज अक्तूबर 1902 ई. को एक विज्ञापन मुझे मिला जो हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ पेन्शनर की ओर से मेरे नाम पर प्रकाशित हुआ है। जिसमें वह लिखते हैं कि मैं एक बार मौखिक तौर पर इस बात का इक़रार कर चुका हूं कि जिन लोगों ने नबी या रसूल या अन्य कोई ख़ुदा की ओर से मामूर होने का दावा किया तो वे लोग ऐसे झूठ के साथ जिस से लोगों को गुमराह करना अभीष्ट था तेईस वर्ष तक (जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अवतरित होने के दिनों का पूर्ण युग है) जीवित रहे अपितु इस से भी अधिक। और फिर हाफ़िज़ साहिब इसी विज्ञापन में लिखते हैं कि उनके इस कथन के समर्थन में उनके एक मित्र अबू इस्हाक़ मुहम्मद दीन नामक ने 'क़तउलवतीन' नामक एक पुस्तक भी लिखी थी जिसमें झूठे दावेदारों के नाम दावे की अवधि सहित ऐतिहासिक पुस्तकों के सन्दर्भ से दर्ज हैं। इस समस्त वर्णन का ख़ुलासा यह मालूम होता है कि हाफ़िज़ साहिब को पवित्र क़ुर्आन की आयत لَوْ تَقَوَّلَ पर ईमान नहीं है और न लाना चाहते हैं और न आयत
وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ (अलमोमिन-29)

पर उनकी आस्था है और न ऐसी आस्था रखना चाहते हैं

बल्कि पुस्तक 'क़तउलवतीन' पवित्र क़ुर्आन की इन आयतों को रद्द कर चुकी है और उनके नज़दीक जैसे ये समस्त आयतें जैसा कि

وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰي ۝ (ताहा-62)

और जैसा कि आयत

اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ۝ (अन्नहल-117)

और जैसा कि -

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ (अलबक़रह-60)

ये सब निरस्त हो चुकी हैं जो अब अमल करने योग्य नहीं। फिर इन आयतों में से वह आयत भी है जिसमें अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यदि यह नबी कुछ बातें बना कर मेरी ओर सम्बद्ध कर देता तो मैं उसे पकड़ता और उस की प्राण-धमनी काट देता। जैसे ये समस्त आयतें पुस्तक 'क़तउलवतनि' से रद्द हो गईं। और इस से यह भी सिद्ध होता है कि जैसे ये ख़ुदा तआला के अज़ाब के समस्त वादे जो उपरोक्त समस्त आयतों में सर्वथा विरुद्ध बातें थीं और ये अंबिया अलैहिमुस्सलाम नऊज़ुबिल्लाह यदि इफ़्तिरा करने वाले होते तब भी हाफ़िज़ साहिब के कथनानुसार क़त्ल न किए जाते तो जैसे ख़ुदा की सरकार में मुफ़्तरियों के लिए कोई प्रबन्ध नहीं और वहां हर एक धोखा चल जाता है।★ और यह संभावना शेष रहती है कि यदि

★**हाशिया :-** जबकि हाफ़िज़ साहिब के नज़दीक झूठे पैग़म्बरों का भी इतना समर्थन हो सकता है कि शत्रुओं के अत्यन्त कष्टदायक प्रयासों के बावजूद वे उस समय तक जीवित रह सकते हैं कि अपने धर्म को पृथ्वी पर स्थापित कर दें तो इस सिद्धान्त से सच्चे नबी सब मिट्टी में मिल गए और झूठ और सच में बहुत गड़-बड़

ख़ुदा पर कोई नबी इफ़्तिरा भी करता तो सांसारिक जीवन में उसके लिए कोई अज़ाब न था। मानो ख़ुदा के क़ानून से मानवीय सरकार के क़ानून बढ़कर हैं कि उनमें झूठे दस्तावेज़ बनाने वाले हाथों हाथ पकड़े जाते और दण्ड पाते हैं। यहां यह विषय भी हल हुआ कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़ुर्आन के पूर्ण होने तक जो तेईस वर्ष का समय था, मुहलत मिलना और विरोधपूर्ण प्रयासों से जो क़त्ल करने के लिए थे, सुरक्षित रहना और जीवन पूरा करके ख़ुदा के आदेश के साथ जाना, जैसा कि मेरे लिए भी अस्सी वर्ष के जीवन की भविष्यवाणी है जब तक कि मैं सब कुछ पूरा कर लूं ये बातें हाफ़िज़ साहिब की नज़र में चमत्कार के रंग में नहीं हैं और न ऐसी भविष्यवाणियों के पूरा होने पर कोई व्यक्ति सच्चा समझा जाता है तो क्या मैं और क्या आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हाफ़िज़ साहिब के धर्मानुसार इस ख़ुदाई सुरक्षा और अस्मत को अपनी सच्चाई का तर्क नहीं ठहरा सकते अपितु झूठा भी इसमें भागीदार हो सकता है। परन्तु इस प्रकार से तो पवित्र क़ुर्आन का सम्पूर्ण वर्णन ग़लत ठहरता है, क्योंकि पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध है कि एक मुफ़्तरी (झूठ गढ़ने वाला) पकड़ा जाएगा, अपमानित होगा, मरेगा। और सफलता

शेष हाशिया - पड़ गई। स्पष्ट है कि हज़ारों शत्रुओं के सैकड़ों बुरे इरादों, धोखों और प्रयासों के विरुद्ध एक मामूर को जीवित रखना तथा धर्म को पृथ्वी पर स्थापित कर देना ख़ुदा तआला का एक बड़ा चमत्कार है जो सच्चे और कामिल नबियों को दिया जाता है। तो जब इस चमत्कार में झूठे पैग़म्बर भी सम्मिलित हैं तो इस स्थिति में चमत्कार भी विश्वसनीय न रहा और सच्चे नबी की सच्चाई पर कोई ठोस निशानी शेष न रही। वाह! हाफ़िज़ साहिब आप ने इस्लाम का ही अन्त कर दिया। हाफ़िज़ हों तो ऐसे हों। इसी से

नहीं पाएगा। और मानव-बुद्धि भी यही स्वीकार करती है कि कज़्ज़ाब जो ख़ुदा के सिलसिले को जान बूझ कर तबाह करना चाहता है मरना चाहिए यही वर्णन जगह-जगह ख़ुदा की पहली किताबों में भी है। परन्तु हाफ़िज़ साहिब का कहना है कि बहुत से लोगों ने झूठी वह्यी और झूठी नुबुव्वत के दावे किए। और उन दावों का सिलसिला तीस-तीस वर्ष तक जारी रखा और अपनी नुबुव्वतों पर हठ धर्म रहे और झूठी वह्यी प्रस्तुत करने का अपना सिलसिला अन्तिम सांस तक न छोड़ा, यहां तक कि उसी कुफ्र पर मर गए और ख़ुदा ने उनकी आयु और कार्य में बरकत दी और कोई अज़ाब न दिया और न सिद्ध हो सका कि कभी उन्होंने तौबः की और कभी उनकी तौबः देश में प्रकाशित हो कर लोगों को उनके दोबारा मुसलमान होने की खबर हुई। और हाफ़िज़ साहिब फ़रमाते हैं कि इन बातों का सबूत पुस्तक 'क़तउलवतीन' में अच्छी तरह लिखा गया है और हाफ़िज़ साहिब लिखते हैं कि मैं इनाम का पांच सौ रुपया लेना नहीं चाहता इसके बदले यह चाहता हूं कि नदवतुल उलेमा के सालाना जल्से में जो 9 अक्टूबर 1902 ई. के प्रारंभ से अमृतसर में आयोजित होगा जिसमें हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध उलेमा सम्मिलित होंगे। मिर्ज़ा साहिब अर्थात् यह ख़ाकसार यह इक़रार लिख दे कि जो उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं (अर्थात् पुस्तक 'क़तउलवतीन' में) यदि निर्धारित हकम के नज़दीक अर्थात् नदवः के उलेमा के नज़दीक परीक्षा की कसौटी पर पूरे उतरें अर्थात् नदवः ने स्वीकार कर लिया हो कि जिस आयु को वह्यी के प्रारंभ से मैंने पाया है और जिस प्रकटन से और पूरे ज़ोर और विश्वास से ख़ुदा की वह्यी पर मेरा दावा है और मैंने हज़ारों वाक्य ख़ुदा तआला

की वह्यी के अपने बारे में लिखे हैं और संसार में प्रसिद्ध किए थे और ख़ुदा पर इफ़्तिरा किया था फिर वे नहीं मरे अपितु मेरी जैसी उनकी भी जमाअत हो गई। तो ऐसी स्थिति में मुझे उस मज्लिस में तौबः करनी चाहिए। मैं स्वीकार करता हूं कि नदवः के उलेमा यदि उनको ख़ुदा ने प्रतिभाशाली आंख दी है और सयंम तथा न्याय भी है और पूर्ण विचार करने के लिए समय भी है तो वे अवश्य मेरे बयान और हाफ़िज़ साहिब की 'क़तउलवतीन' को देखकर सच्चा फ़त्वा दे सकते हैं। परन्तु मैं नदवः के पास अमृतसर में आ नहीं सकता, क्योंकि मेरी इन लोगों पर सुधारणा नहीं है। सच्ची बात यह है कि मैं न तो इन लोगों को मुत्तक़ी (संयमी) समझता हूं (भविष्य में ख़ुदा किसी को मुत्तक़ी कर दे तो उसकी कृपा है) और न क़ुर्आन की वास्तविकताओं का आरिफ़ (ज्ञानी) समझता हूं क्योंकि यह बात-

لَّا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ (अलवाकिअ:80)

पर निर्भर है। फिर मैं उनका हकम होना किस कारण स्वीकार करूं। हां यदि कुछ उन में से चुने हुए मौलवी और सत्याभिलाषी क़ादियान में आ जाएं तो मैं उनको मौखिक तब्लीग़ कर सकता हूं अन्यथा ख़ुदा का कार्य चल रहा है कोई विरोधी इसे रोक नहीं सकता। विरोधी से फ़त्वा लेना क्या मायने रखता है। हां यद्यपि हाफ़िज़ साहिब के इस विज्ञापन से नदवः के लिए तब्लीग़ का एक अवसर निकालते हैं। हाफ़िज़ साहिब स्मरण रखें कि जो कुछ पुस्तक 'क़तउलवतीन' में नुबुव्वत के झूठे दावेदारों के बारे में किस्से लिखे गए हैं वे क़िस्से उस समय तक एक कण भर विश्वसनीय नहीं जब तक यह सिद्ध न हो कि मुफ़्तरी लोगों ने अपने उस दावे पर

आग्रह किया और तौब: न की। और यह आग्रह क्योंकर सिद्ध हो सकता है जब तक उसी युग के किसी लेख द्वारा यह बात सिद्ध न हो कि वे लोग उसी इफ़्तिरा और नुबुव्वत के झूठे दावे पर मरे और उनका उस समय के किसी मौलवी ने जनाज़ा न पढ़ा और न वे मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में दफ़्न किए गए। और इसी प्रकार ये क़िस्से कदापि सिद्ध नहीं हो सकते जब तक यह सिद्ध न हो कि उनकी समस्त आयु के बनाए हुए झूठ जिन को उन्होंने बतौर इफ़्तिरा ख़ुदा का कलाम ठहराया था वे अब कहां हैं और उनकी वह्यी की ऐसी किताब किस के पास है ताकि उस किताब को देखा जाए कि क्या कभी उन्होंने किसी ठोस निश्चित वह्यी का दावा किया और इस आधार पर स्वयं को ज़िल्ली तौर पर या असली तौर पर अल्लाह का नबी ठहराया है और अपनी वह्यी को दूसरे नबियों की वह्यी के मुक़ाबले पर ख़ुदा की ओर से होने में बराबर समझा है ताकि उस पर تَقَوَّلَ के मायने सच्चे ठहरें। हाफ़िज़ सहिब को मालूम नहीं कि تَقَوَّلَ का आदेश क़तअ और विश्वास के बारे में है। तो जैसा कि मैंने बार-बार वर्णन कर दिया है कि यह कलाम जो मैं सुनाता हूं यह ठोस और निश्चित तौर पर ख़ुदा का कलाम है जैसा कि क़ुर्आन और तौरात ख़ुदा का कलाम है और मैं ख़ुदा का ज़िल्ली और बुरूज़ी तौर पर नबी हूं और प्रत्येक मुसलमान को धार्मिक मामलों में मेरा आज्ञापालन आवश्यक है और मसीह मौऊद मानना अनिवार्य है और प्रत्येक जिसे मेरी तब्लीग़ पहुंच गई है यद्यपि वह मुसलमान है परन्तु मुझे अपना हकम नहीं ठहराता और न मुझे मसीह मौऊद मानता है और न मेरी वह्यी को ख़ुदा की ओर से जानता है

वह आकाश पर गिरफ़्त योग्य है क्योंकि जिस बात को उसने अपने समय पर स्वीकार करना था उसे अस्वीकार कर दिया। मैं केवल यह नहीं कहता कि यदि मैं झूठा होता तो मार दिया जाता अपितु मैं यह कहता हूं कि मूसा और ईसा तथा दाऊद और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरह मैं सच्चा हूं और मेरे सत्यापन के लिए ख़ुदा ने दस हज़ार से भी अधिक निशान दिखलाए हैं, क़ुर्आन ने मेरी गवाही दी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे आने का समय निर्धारित कर दिया है कि जो यही युग और क़ुर्आन भी मेरे आने का युग निर्धारित करता है कि जो यही युग है। और मेरे लिए आकाश ने भी गवाही दी और पृथ्वी ने भी। और कोई नबी नहीं जो मेरे लिए गवाही नहीं दे चुका। और यह जो मैंने कहा कि मेरे दस हज़ार निशान हैं यह बतौर कमी लिखा गया अन्यथा मुझे क़सम है उस हस्ती की जिस के हाथ में मेरी जान है कि यदि एक सफेद पुस्तक हज़ार खंड की भी हो और अभी मैं अपने सच्चे होने के तर्क लिखना चाहूं तो मैं विश्वास रखता हूं कि वह पुस्तक समाप्त हो जाएगी और वे समाप्त नहीं होंगे। अल्लाह तआला अपने पवित्र कलाम में फ़रमाता है -

وَاِنۡ یَّکُ کَاذِبًا فَعَلَیۡہِ کَذِبُہٗ ۚ وَاِنۡ یَّکُ صَادِقًا یُّصِبۡکُمۡ بَعۡضُ الَّذِیۡ یَعِدُکُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰہَ لَا یَھۡدِیۡ مَنۡ ھُوَ مُسۡرِفٌ کَذَّابٌ ۝

(अलमोमिन-29)

अर्थात् यदि यह झूठा होगा तो तुम्हारे देखते-देखते तबाह हो जाएगा और उसका झूठ ही उसको मार देगा, परन्तु यदि सच्चा है तो कुछ तुम में से इसकी भविष्यवाणी का निशाना बनेंगे और उसके

देखते-देखते इस दारुलफ़ना (नश्वर संसार) से कूच करेंगे। अब इस मापदण्ड के अनुसार जो ख़ुदा के कलाम में है मुझे परखो और मेरे दावे को परखो। क्या यह सच नहीं है कि इन मौलवी साहिबों ने मुझे तबाह करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी। कुफ़्रनामा तैयार करते-करते इनके पैर घिस गए, गालियों के विज्ञापन प्रकाशित करते करते शियों को भी पीछे डाल दिया, मुझ पर ख़ून के मुक़द्दमें बनाए गए और कई बार फ़ौजदारी आरोपों के अन्तर्गत रख कर मुझे अदालत तक पहुंचाया गया। मेरी ओर आने वालों पर वह कठोरता की गई कि सहाबा[रज़ि॰] के उस जीवन के अतिरिक्त जब मक्का में थे संसार में उस अपमान, तिरस्कार और कष्ट का उदाहरण नहीं पाया जाता। मेरे कुछ अन्य देशों के संबंधी लोग उन्हीं देशों में क़त्ल किए गए। अत: इस से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि मुझे मिटाने के लिए तथा लोगों को मेरी ओर आने से मना करने के लिए नाख़ूनों तक ज़ोर लगाया गया और कोई कमी शेष नहीं छोड़ी। बहुत से निर्लज्जता के कार्य इन्हीं मौलवियों में से कुछ के द्वारा प्रकटन में आए। मुझ पर झूठी जासूसियां भी की गईं और अकारण सरकार को वास्तविकता के विरुद्ध बातों के साथ उकसाया गया। किन्तु कुछ ख़बर है कि अन्तत: उस का परिणाम क्या हुआ? यह हुआ कि मैं उन्नति करता गया। जब ये लोग मुझे काफ़िर ठहराने और झुठलाने के लिए खड़े हुए और स्वयं भविष्यवाणियां कीं कि हम इस व्यक्ति को अति शीघ्र मिटा देंगे उस समय मेरे साथ कोई बड़ी जमाअत न थी अपितु केवल कुछ आदमी थे जिन को उंगलियों पर गिन सकते थे। बल्कि बराहीन अहमदिया के युग में जब बराहीन

अहमदिया छप रही थी मैं केवल अकेला था। कौन सिद्ध कर सकता है कि उस समय मेरे साथ कोई एक भी न था। यह वह समय था कि जब ख़ुदा तआला ने पचास से अधिक भविष्यवाणयों में मुझे सूचना दी थी कि यद्यपि इस समय तू अकेला है परन्तु वह समय आता है कि तेरे साथ एक संसार होगा और फिर वह समय आता है कि तेरा इतना उत्थान होगा कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढेंगे क्योंकि तू बरकत दिया जएगा। ख़ुदा पवित्र है जो चाहता है करता है। वह तेरे सिलसिले को और तेरी जमाअत को पृथ्वी पर फैलाएगा और उन्हें बरकत देगा और बढ़ाएगा और उनका सम्मान पृथ्वी पर स्थापित करेगा जब तक कि वे उसके अहद पर स्थापित होंगे। अब देखो कि बराहीन अहमदिया की उन भविष्यवाणियों का जिन का अनुवाद लिखा गया वह समय था जबकि मेरे साथ दुनिया में एक भी नहीं था जब ख़ुदा ने मुझे यह दुआ सिखाई -

رَبِّ لَا تَذَرۡنِیۡ فَرۡدًا وَّ اَنۡتَ خَیۡرُ الۡوٰرِثِیۡنَ ۞ (अलअंबिया-90)

अर्थात् हे ख़ुदा मुझे अकेला मत छोड़ और तू सब से उत्तम वारिस है। यह इल्हामी दुआ बराहीन में दर्ज है। अतः उस समय के लिए तो बराहीन अहमदिया स्वयं गवाही दे रही है कि मैं उस समय एक गुमनाम आदमी था परन्तु आज विरोधात्मक प्रयासों के बावजूद मेरी जमाअत एक लाख से भी अधिक विभिन्न स्थानों में मौजूद है। फिर क्या यह चमत्कार है या नहीं कि मेरे विरोध और मुझे गिराने में हर प्रकार के छल किए, षड्यंत्र किए परन्तु ये सब मौलवी और उनके छोटे-बड़े साथी सब के सब असफल रहे। यदि यह चमत्कार नहीं तो फिर चमत्कार की परिभाषा नदव: के जुब्बा पहनने वाले

स्वयं ही करें कि किस चीज़ का नाम है। यदि मैं चमत्कार वाला नहीं तो झूठा हूं, यदि क़ुर्आन से इब्ने मरयम की मृत्यु सिद्ध नहीं तो मैं झूठा हूं, यदि क़ुर्आन ने सूरह नूर में नहीं कहा कि इस उम्मत के ख़लीफ़े इसी उम्मत में से होंगे तो मैं झूठा हूं, यदि क़ुर्आन ने मेरा नाम इब्ने मरयम नहीं रखा तो मैं झूठा हूं। हे नश्वर इन्सानो! होशियार हो जाओ और सोचो कि इसके अतिरिक्त चमत्कार क्या होता है कि विरोधियों के इतने लड़ाई-झगड़े के बाद अन्ततः बराहीन अहमदिया की वे भविष्यवाणियां सच्ची निकलीं जो आज से बाईस वर्ष पूर्व की गई थीं। तुम सिद्ध नहीं कर सकते कि उस युग में एक व्यक्ति भी मेरे साथ था, परन्तु इस समय यदि मेरी जमाअत के लोग एक स्थान पर आबाद किए जाएं तो मैं विश्वास रखता हूं तो वह शहर अमृतसर से भी कुछ बड़ा होगा। हालांकि बराहीन के समय में जब यह भविष्यवाणी की गई मैं केवल अकेला था। फिर यदि मौलवियों का हस्तक्षेप मध्य में न होता तो बराहीन अहमदिया की भविष्यवाणी पर दोहरा रंग न चढ़ता। परन्तु अब तो मौलवियों और उनके अनुयायियों के विरोधात्मक प्रयासों ने इस चमत्कार पर दोहरा रंग चढ़ा दिया और बजाए इसके कि-

وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ (अलमोमिन - 29)

के निबंध के अनुसार मुझे केवल सच्चा होने के कारण इस आयत की निर्धारित की हुई निशानी से बरीयत मिल जाती। अब तो इस के अतिरिक्त बराहीन अहमदिया की महान भविष्वयाणियां जो इस युग से बीस बाईस वर्ष पूर्व संसार में प्रकाशित हो चुकी हैं वे पूरी हो गईं और हज़ारों बुज़ुर्ग और विद्वान लोग मेरे साथ हो गए। अब इस

आयत का दूसरा भाग देखो

وَاِنۡ یَّکُ صَادِقًا یُّصِبۡکُمۡ بَعۡضُ الَّذِیۡ یَعِدُکُمۡ ؕ(अलमोमिन-29)

यह मापदण्ड भी कैसा चमत्कारपूर्ण रंग में पूरा हुआ। ख़ुदा ने मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया कि اِنِّیۡ مُھِیۡنٌ مَنۡ اَرَادَ اِھَانَتَکَ प्रत्येक व्यक्ति जो तेरा अपमान करेगा वह नहीं मरेगा जब तक वह अपना अपमान न देख ले। अब इन मौलवियों से पूछ लो कि उन्होंने मेरे मुकाबले पर ख़ुदा के आदेश से कोई अपमान भी देखा है या नहीं। अब मेरा अपमान करने वाला कौन बोल सकता है कि क़ुर्आन की यह भविष्यवाणी जो یصبکم بعض الذی یعدکم है मेरे समर्थन के लिए प्रकटन में नहीं आई अपितु पवित्र क़ुर्आन ने بعضके शब्द से जतला दिया कि अज़ाब के वादे को भविष्यवाणी के लिए بعضका नमूना पर्याप्त है और यहां नमूने कम नहीं। क्या विरोधियों का इस में कम अपमान है कि ग़ुलाम दस्तगीर अपनी पुस्तक 'फ़त्ह रहमानी' में अर्थात् पृष्ठ-27 में मुझ पर सामान्य शब्दों में बद्-दुआ करके अर्थात् दोनों पक्षों में से झूठे पर बद्-दुआ करके स्वयं ही कुछ दिन के बाद मर गया।★ मुहम्मद हसन 'भीं' ने अपने लेख में लानतुल्लाहि अलल काज़बीन (झूठों पर ख़ुदा की लानत) का शब्द मेरे मुकाबले पर बोला, वह पुस्तक पूरी न कर पाया कि कठोर अज़ाब से मर गया। पीर मेहर अली शाह ने अपनी पुस्तक में मेरे मुकाबले पर लानतुल्लाहि अलल काज़बीन कहा वह अचानक

★**हाशिया :-** देखो कि क्या यह चमत्कार नहीं कि जिस मौलवी ने मक्का के कुछ नादान मुल्लाओं से मुझ पर कुफ्र का फ़त्वा लिखवा दिया था वह मुबाहलः करके स्वयं ही मर गया। इसी से

चोरी के अपराध में इस प्रकार गिरफ़्तार हुआ कि उसने★ पूरी पुस्तक मुहम्मद हसन मुर्दा की चुरा ली और कहा कि मैंने बनाई है और झूठ बोला तथा उसका नाम "सैफ़े चिश्तियाई" रखा। फिर तीसरा संकट यह कि मुहम्मद हसन मुर्दा ने जितनी मेरी पुस्तक पर जिरह (प्रतिप्रश्न) की थी वह सम्पूर्ण जिरह ग़लत सिद्ध हुई। उसने अभी दूसरी नज़र नहीं डाल पाई थी कि मर गया। उस मूर्ख ने जो अरबी से वंचित है इस समस्त जिरह को सच समझ लिया अब बताओ कि यह भी एक प्रकार की मौत है या नहीं कि पुस्तक का मसौदा चुरा लिया और वह चोरी पकड़ी गई और फिर गद्दी नशीन होकर स्पष्ट झूठ बोला कि यह पुस्तक मैंने बनाई है और फिर जो कुछ चुराया वे ऐसी ग़लतियां थीं कि जैसे विष्ठा थी। क्या इस अज़ाब से नर्क का अज़ाब कुछ अधिक है।✳ फिर हाफ़िज़ साहिब की सेवा

★**हाशिया** :- मेहर अली ने मुहम्मद हसन मुर्दा की मीन मेख पर भरोसा करके यह मूर्खतापूर्ण आरोप मुझ पर लगाया कि अरब की कुछ प्रसिद्ध मिसालें या वाक्य जो मक़ामाते हरीरी इत्यादि ने भी नक़ल किए हैं वे बतौर वक्तव्य मेरी पुस्तक में भी पाए जाते हैं जो दो-तीन पंक्तियों से अधिक नहीं, जैसे इस मूर्ख की दृष्टि में यह चोरी है। तो उस समय अवश्य था कि वह भविष्यवाणी अपनी चेहरा दिखलाती कि انّی مهین من اراد اهانتک (अर्थात् मैं उसको अपमानित करूंगा जो तेरे अपमान का इरादा करेगा) इसलिए वह सम्पूर्ण पुस्तक का चोर सिद्ध हुआ और झूठ बोला और ग़लत मीन-मेख का अनुकरण किया और सतर्क न हो सका कि यह ग़लत है। इस प्रकार वह तीन घोर अपराधों में पकड़ा गया। क्या यह चमत्कार नहीं? इसी से।

✳ मेहर अली की यह चोरी और फिर मूर्खता से ग़लतियों पर भरोसा करना और मूर्खता से इब्न-ए-मरयम को जीवित करार देना आदि मामले जो सर्वथा मूर्खता

में ख़ुलासा कलाम यह है कि मेरे तौब: करने के लिए केवल इतना पर्याप्त न होगा कि असंभावित रूप से मान लें कि नुबुव्वत के दावेदार की कोई पुस्तक इल्हामी निकल आए जिसको वह पवित्र क़ुर्आन की तरह (जैसा कि मेरा दावा है) ख़ुदा की ऐसी वह्यी कहता हो जिस की विशेषता में लारैबफ़ीह है (कोई सन्देह नहीं) जैसा कि मैं कहता हूं और यह भी सिद्ध हो जाए कि वह बिना तौब: के मरा और मुसलमानों ने अपने क़ब्रिस्तान में उसे दफ़्न न किया तथा किसी अज़ाब से नहीं मरा तो केवल इतने से ही कोई नुबुव्वत का झूठा दावेदार मेरे बराबर नहीं ठहर सकता। क्योंकि मेरे समर्थन में चमत्कार भी हैं और उन सबके अतिरिक्त मैं विश्वास रखता हूं कि यदि हाफ़िज़ साहिब कोशिश करते-करते संसार से कूच भी कर जाएं या किसी और अबू इस्हाक़ मुहम्मददीन एक हज़ार पुस्तकें 'क़तउलवतीन' की लिखवा भी लें और यद्यपि ऐसा व्यक्ति अपने लिए आत्महत्या पसन्द करके 'क़तउलवतीन' ही कर ले परन्तु फिर भी हाफ़िज़ साहिब के भाग्य में न होगा कि जिस प्रकार मैं लगभग तेईस वर्ष से अपनी वह्यी निरन्तर आज के दिन तक प्रकाशित करता रहा हूं। इसी प्रकार उसकी निरन्तर तेईस वर्ष की वह्यी का संग्रह प्रस्तुत कर सकें। जिस पर उसने मेरी तरह क़सम खाकर वर्णन किया हो कि यह वह्यी निश्चित और ठोस तौर पर ख़ुदा का कलाम है।

शेष हाशिया - और नादानी के कारण उस से हुईं। इसके बारे में मेरी ओर से एक ज़बरदस्त पुस्तक लिखी जा रही है जिसका नाम **'नुज़ूलुलमसीह'** है, जिस से तंबूर चिश्तियाई टुकड़े-टुकड़े होकर उसमें केवल धूल और मिट्टी रह जाएगी जो मेहर अली की आंखों में पड़ेगी और उसके जीवन को कड़वा कर देगी। यह पुस्तक ग्यारह फ़र्मे तक छप चुकी है। इसी से

यदि मैंने झूठ बोला हो तो मुझ पर भी ख़ुदा की लानत हो, जैसा कि मैं अपनी पुस्तकों में अपने बारे में यही शब्द लिख चुका हूं। यह तो एक निम्न स्तर की बात है कि झूठों के साथ मेरी तुलना न की जाए। परन्तु मैं तो इस से बढ़कर अपना सबूत रखता हूं कि अब तक हज़ारों चमत्कार प्रकट हो चुके हैं जिनके हज़ारों गवाह हैं और पवित्र क़ुर्आन मेरा सत्यापनकर्ता है। क्या यह मेरा अधिकार नहीं है कि मुकाबले के समय इन सबूतों को किसी झूठे प्रस्तुत किए हुए के बारे में आप से मांगू। भला बताएं कि मेरे बिना किस के लिए दारे क़ुतनी की हदीस के अनुसार चन्द्र और सूर्य-ग्रहण हुआ? किस के लिए सही हदीसों के अनुसार ताऊन पड़ी? किस के लिए पुच्छल तारा निकला? किस के लिए लेखराम इत्यादि के निशान प्रकट हुए? यदि 'नदवतुलउलमा' जैसा नाम वैसे गुण करना चाहे तो अब उसकी अपनी व्यक्तिगत हिदायत के लिए चाहे हाफ़िज़ साहिब उस से कुछ हिस्सा लें या न लें इतना भी पर्याप्त हो सकता है कि हाफ़िज़ साहिब से तो ऐसे नुबुव्वत के दावेदारों का क़सम लेकर सबूत मांगें जिन की झूठी वह्यी का पवित्र क़ुर्आन की तरह निरन्तर तेईस वर्ष तक सिलसिला जारी रहा और उन से सबूत मांगे कि उन्होंने क़सम के साथ कहां वर्णन किया कि हम वास्तव में नबी हैं और हमारी वह्यी क़ुर्आन की तरह ठोस एवं निश्चित है और यह भी सबूत मांगें कि क्या वे लोग उस युग के मौलवियों के फ़त्वे से काफ़िर ठहराए गए थे या नहीं। और यदि नहीं ठहराए गए थे या नहीं। और यदि नहीं ठहराए गए थे तो इस का क्या कारण? क्या ऐसे मौलवी पापी और दुराचारी थे या नहीं जिन्होंने धर्म में ऐसी लापरवाही प्रकट की। और

यह भी सबूत मांगें कि ऐसे लोग किन क़ब्रों में दफ़्न किए गए, क्या मुसलमानों की क़ब्रों में या पृथक तथा इस्लामी हुकूमत★ में क़त्ल हुए या अमन से आयु गुज़री? हाफ़िज़ साहिब से तो यह सबूत मांगा जाए और फिर मेरे चमत्कार तथा क़ुर्आन एवं हदीस से स्पष्ट आदेशों से संबंधित अन्य तर्कों को सबूत मांगने के लिए 'नदवतुलउलेमा' के कुछ चुने हुए उलेमा क़ादियान में आएं और मुझ से चमत्कार और तर्क अर्थात् क़ुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेशों का सबूत लें। फिर यदि नबियों की सुन्नत के अनुसार मैंने पूरा सबूत न दिया तो मैं सहमत हूं कि मेरी पुस्तकें जलाई जाएं। परन्तु इतना परिश्रम करना बड़े ख़ुदा वाले इन्सान का काम है। नदवः को क्या आवश्यकता जो इतना सरदर्द ले और कौन सी आख़िरत की चिन्ता है ताकि ख़ुदा से डरे। परन्तु नदवः के उलेमा एक-एक करके स्मरण रखें कि वे हमेशा दुनिया में नहीं रह सकते मौतें पुकार रही हैं और जिस खेल-कूद में वे व्यस्त हो रहे हैं जिसका नाम वे धर्म रखते है। ख़ुदा आकाश पर देख रहा है और जानता है कि वह **धर्म** नहीं है। वे एक छिलके पर प्रसन्न हैं और मग़ज़ (मज्जा अर्थात् सार) से अनभिज्ञ हैं। यह इस्लाम की हमदर्दी नहीं बल्कि अशुभ चाहना है। काश यदि उनकी आंखें होतीं तो वे समझते कि दुनिया में बड़ा पाप किया गया कि ख़ुदा के **मसीह** को अस्वीकार कर दिया गया।

★**हाशिया :-** इस्लामी हुकूमत में सबूत देने में यह पर्याप्त नहीं कि ऐसे व्यक्ति जो नुबुव्वत का दावेदार था मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में न दफ़्न किया गया और न उसका जनाज़ा पढ़ा गया अपितु पर्याप्त सबूत के लिए यह भी सिद्ध करना होगा कि वह क़त्ल भी किया गया, क्योंकि वह मुर्तद था। किन्तु हाफ़िज़ साहिब यदि यह सबूत दे दें तो मानो जिस बात से भागते थे उसी को स्वीकार कर लेंगे। इसी से

इस बात का प्रत्येक को मरने के पश्चात् पता लगेगा। और हाफ़िज़ साहिब मुझे डराते हैं कि तुम यदि अमृतसर में न आए तो अपने दावे में समस्त संसार में झूठे समझे जाओगे। हे **हाफ़िज़** साहिब! दुनिया किस की है ख़ुदा की या आप की। आप लोग तो अब भी मुझे झूठा ही समझ रहे हैं इसके बाद और क्या समझेंगे। आप की दुनिया की हमें क्या परवाह। प्रत्येक व्यक्ति मेरे ख़ुदा के क़दमों के नीचे है। हे बुरा चाहने वाले हाफ़िज़ सुन तुझे क्या ख़बर कि ख़ुदा का समर्थन मेरी कितनी उन्नति कर रहा है। ईर्ष्यालु यदि मर भी जाए तो यह उन्नति रुक नहीं सकती, क्योंकि ख़ुदा के हाथ से और ख़ुदा के वादे के अनुसार है न कि इन्सान के हाथ से। ख़ुदा ने मेरी जमाअत से पंजाब और हिन्दुस्तान के शहरों को भर दिया। कुछ वर्षों में एक लाख से भी अधिक लोगों ने मेरी बैअत की। क्या अभी आप नहीं समझते कि आकाश पर किस का समर्थन हो रहा है। मेरे विचार में तो दस हज़ार के लगभग तो ताऊन के द्वारा ही मेरी जमाअत में दाखिल हुए और मैं विश्वास रखता हूं कि थोड़े दिनों में मेरी जमाअत से ज़मीन भर जाएगी। हे हाफ़िज़ साहिब! क्या आप वही हाफ़िज़ साहिब नहीं जिन्होंने मुझ को किसी अन्य माध्यम के बिना कहा था कि मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी कहते थे कि **क़ादियान पर एक नूर उतरा** जिस से मेरी सन्तान वंचित रह गयी। अफ़सोस आप ने क़ब्र में अब्दुल्लाह साहिब को दुख दिया। क्या उनके कथन के विपरीत यह विरुद्ध तरीका आपको उचित था। फिर क्या मियां मुहम्मद याक़ूब आपके सगे भाई नहीं हैं उन से भी तो थोड़ा पूछ लिया होता। वह तो लगभग दस वर्ष से दुहाई दे रहे

हैं कि उनको भी मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी ने क़ादियान का ही हवाला दिया था कि नूर (क़ादियान में ही उतरेगा। और वह ग़ुलाम अहमद है। और उन्होंने ख़बर दी है कि वह अब भी इस गवाही पर क़ायम हैं। और उनका पत्र मौजूद। फिर आप हाफ़िज़ कहला कर वास्तविक हाफ़िज़ पर भरोसा नहीं रखते, क़ौम के डर से झूठ बोलते हैं। मैं सोच में हूं कि अब्दुल्लाह साहिब के ये कैसे कश्फ़ थे जो उन के साथ ही धूल में मिल गए। आप जैसे उनके बड़े ख़लीफ़ा ने भी उन की क़द्र न की।

والسلام علے من اتبع الھدٰی

लेखक - मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

4 अक्टूबर 1902 ई.

समस्त मुसलमानों और सच्चाई के समस्त भूखों और प्यासों के लिए एक बड़ी ख़ुशख़बरी

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जिन का विलक्षण जीवन और क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशों के विरुद्ध शरीर के साथ आकाश पर चले जाना और मृत्यु-प्राप्त न होने के बावजूद फिर मृत्यु प्राप्त नबियों की रूहों में जो एक प्रकार से स्वर्ग में प्रवेश कर चुके दाख़िल हो जाना ये सब ऐसी बातें थीं जो वास्तव में सच्चे धर्म के लिए एक दाग़ था और एक लम्बे समय से पश्चिम के सृष्टि उपासकों का एकेश्वरवादी मुसलमानों के दायित्त्व में एक क़र्ज़ा चला आ रहा था और मूर्ख मुसलमान ने भी इस क़र्ज़े का इक़रार करके अपने ऊपर ब्याज की एक बड़ी राशि ईसाइयों की बढ़ा दी थी, जिसके कारण

कई लाख मुसलमान इस देश हिन्दुस्तान में मुर्तद होने का लिबास पहन कर ईसाइयों के हाथ में गिरवी पड़े हुए थे और क़र्ज़ा अदा करने का कोई उपाय दिखाई नहीं देता था। जब ईसाई कहा करते थे कि रब्बना यसू मसीह आकाश पर शरीर के साथ जीवित चढ़ गया, बड़ी शक्ति दिखाई ख़ुदा जो था, परन्तु तुम्हारा नबी तो हिजरत करने के बाद मदीना तक भी उड़कर न जा सका। सौर गुफ़ा में ही तीन दिन तक छुपा रहा। अन्त में बड़ी कठिनाई से मदीना तक पहुंचा। फिर भी आयु ने वफ़ा न की दस वर्ष के बाद मृत्यु प्राप्त हो गया और अब वह क़ब्र में और ज़मीन के नीचे है, परन्तु यसू मसीह जीवित आकाश पर है और हमेशा जीवित रहेगा और वही दोबारा आकाश से उतर कर दुनिया का न्याय करेगा। प्रत्येक जो उसको ख़ुदा नहीं जानता वह पकड़ा जाएगा और आग में डाला जाएगा।

इस का उत्तर मुसलमानों को कुछ भी नहीं आता। बहुत ही शर्मिन्दा और अपमानित होते थे। अब यसू मसीह की ख़ुदाई ख़ूब प्रकट हुई। आकाश पर चढ़ने का सारा भांडा फूट गया। पहले तो हज़ार प्रतियों से अधिक ऐसी तिब्ब की पुस्तकें जिन को प्राचीन काल में रूमियों, यूनानियों, अग्निपूजकों, ईसाइयों और सब के बाद मुसलमानों ने भी इनका अनुवाद किया था पैदा हो गईं जिन में एक नुस्ख़ा मरहम-ए-ईसा का लिखा है इन पुस्तकों में वर्णन किया गया है कि यह मरहम ईसा के लिए अर्थात् उन के सलीबी ज़ख़्मों के लिए बनाया गया था। तत्पश्चात् कश्मीर में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र भी पैदा हो गई। फिर इसके बाद अरबी और फ़ारसी में पुरानी पुस्तकें पैदा हो गईं। कुछ उनमें से हज़ार वर्ष

की लिखी हुई हैं और हज़रत ईसा की मृत्यु की गवाही देती और उनकी क़ब्र कश्मीर में बताती हैं। फिर सब के पश्चात् जो आज हमें ख़बर मिली यह तो एक ऐसी ख़बर है कि जैसे आज उस ने मुसलमानों के लिए ईद का दिन चढ़ा दिया है और वह यह है कि वर्तमान में यरोशलम में पतरस हवारी का एक हस्ताक्षर किया हुआ क़ाग़ज़ पुरानी इब्रानी में लिखा हुआ प्राप्त हुआ है जिसे 'कश्ती नूह' पुस्तक के साथ संलग्न किया गया है। इस से सिद्ध होता है कि हज़रत मसीह सलीब की घटना पर मृत्यु पा गए थे। और वह काग़ज़ एक ईसाई कम्पनी ने अढ़ाई लाख रुपए देकर खरीद लिया है। क्योंकि यह फ़ैसला हो गया है कि वह पतरस का लिखा है स्पष्ट है कि इतने सबूतों के एकत्र होने के बाद जो ज़बरदस्त गवाहियां हैं फिर इस बेहूदा आस्था से कि ईसा जीवित है न रुकना एक पागलपन है। महसूस और देखी जा चुकी बातों से इन्कारी नहीं हो सकता। इसलिए **मुसलमानो तुम्हें मुबारक हो आज तुम्हारे लिए ईद का दिन है।** उन पहली झूठी आस्थाओं को छोड़ दो और अब क़ुर्आन के अनुसार अपनी आस्था बना लो। दोबारा यह कि अन्तिम साक्ष्य हज़रत ईसा के सब से बुज़ुर्ग हवारी की साक्ष्य है। यह वह हवारी है कि अपने लेख में जो प्राप्त हुआ है स्वयं उस साक्ष्य के लिए ये शब्द प्रयोग करता है कि मैं इब्ने मरयम का सेवक हूं और अब मैं नव्वे[90] वर्ष की आयु में यह पत्र लिखता हूं जबकि मरयम के बेटों को मरे हुए तीन वर्ष गुज़र चुके हैं। परन्तु इतिहास से यह बात प्रमाणित है और बड़े-बड़े मसीही उलेमा इस बात को स्वीकार करते हैं कि पतरस और हज़रत ईसा का

जन्म करीब-करीब समय में था और सलीब की घटना के समय हज़रत ईसा की आयु लगभग तेतीस वर्ष और हज़रत पतरस की आयु उस समय तीस चालीस के मध्य थी (देखो किताब स्मिथस् डिक्शनरी जिल्द-3, पृष्ठ-2446 तथा मोटी टयूलिस न्यू टेस्टामेण्ट हिस्ट्री तथा अन्य ऐतिहासिक पुस्तकें) और इस पत्र के संबंध में ईसाई धर्म के बुज़ुर्ग उलेमा ने बहुत अनुसंधान करके यह फैसला किया है कि यह सही है और इसके लिए बड़ी प्रसन्नता अभिव्यक्त की है और जैसा कि हम लिख चुके हैं ऐसे सम्मानपूर्वक यह पत्र देखा गया है कि इसके बदले में एक भारी राशि उस वारिस मुक़द्दस राहिब को दी गई है जिसके पुस्तकालयों से मृत्यु के बाद यह काग़ज़ मिला है और हमारे नज़दीक इस काग़ज़ के सही होने पर एक सुदृढ़ तर्क है कि ऐसे व्यक्ति के पुस्तकालय से यह काग़ज़ निकला है जो रोमन केथोलिक आस्था रखता था। और न केवल हज़रत ईसा की ख़ुदाई का भी क़ाइल था। ये काग़ज़ उसने केवल एक पुराने तबर्रुकों में रखे हुए थे और चूंकि वह पुरानी इब्रानी थी और लिखने का ढंग भी पुराना था। इसलिए वह उसके निबंध से अपरिचित था। यह एक निशान है। इसके अतिरिक्त इस नवीन साक्ष्य जो हज़रत पतरस के पत्र में से निकली है। ईसाइयों के पहले लोगों में से कुछ समुदाय स्वयं इस बात के क़ाइल हैं कि हज़रत ईसा सलीब पर से एक मौत के समान बड़ी बेहोशी का अवस्था में उतारे गए थे और एक गुफ़ा के अन्दर तीन दिन के उपचार इत्यादि से स्वस्थ हो कर किसी अन्य ओर चले गए जहां लम्बे समय तक जीवित रहे और आस्थाओं का वर्णन अंग्रेज़ी

पुस्तकों में विस्तारपूर्वक दर्ज है जिन में से पुस्तक 'न्यू लायफ़ आफ़ जीसिस' लेख स्ट्रास और पुस्तक "मार्डन डॉट एन्ड क्रिस्चन बिलीफ़" और किताब "सुपर नेचरल रेलीजन" की कुछ इबारतें हमने अपनी पुस्तक तुहफ़ा गोलड़विया में लिखी हैं।

लेखक - मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

6 अक्टूबर 1902 ई.